दिनांक 03-10-1975 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

विशाल बुद्धि
व
अब दृढ़ संकल्प की तीली से रावण को जलाओ

विधि और विधान जानने वाला खुद को बनाओ
हर संकल्प हर कर्म में सिद्धि स्वरूप कहलाओ

वर्तमान में तुम बेगमपुर के बादशाह बन जाओ
भविष्य में राज्य भाग्य पाने वाले तुम कहलाओ

विश्व कल्याणकारी स्वरूप में स्थित होते जाओ
जगत माता व जगत पिता बनकर रहम जगाओ

ईश्वरीय सेवा का रूप बेहद और विशाल बनाओ
विशेषताओं के घूंघट से खुद को निकलते जाओ

अपने सर्व सम्बन्ध केवल एक के साथ बनाओ
फरिश्तों की सभा में बैठने लायक बनते जाओ

हर सेकण्ड हर बोल बाप की सेवा प्रति लगाओ
चलते फिरते कर्म करते अव्यक्त भाव जगाओ

व्यक्त देह रूपी धरनी से बुद्धि का पाँव उठाओ
खुद को केवल अवतरित आत्मा समझते जाओ

केवल धर्म स्थापना के कार्य में खुद को लगाओ
इसी स्मृति में रहकर फरिश्ता खुद को बनाओ

भक्ति मार्ग में किया वादा स्मृति में तुम लाओ
अपना जो कुछ है वो बाप पर अर्पित करते जाओ

हर बन्धन हर बोझ से तुम खुद को मुक्त बनाओ
सर्व संकल्पों में अपना पदमा पदम् भाग्य बनाओ

दृढ़ता की तीली से कमजोरी का रावण जलाओ
पांच विकारों और पांच तत्वों पर विजय पाओ